डॉ. भारती एस. आर.

2020-21

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Curren Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

October- 2018 Issue- XI Vol. III

Chief Editor

Mr. Arun B. Godam

Shaurya Publication , Latur

112

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) Oct. 2018 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Index

1. Digital Banking :An Overview
Dr Madhukar P Aghav — 5

2. Financial Markets : Evaluating Averages and Indicators
Dr Sachin Nagnath Hadoltikar
Memon Sohel Mohd Yusuf — 13

3. Human Resource Management (Hrm) :An Overview
Dr. Kathar Ganesh. N. — 19

4. Impact of Mergers & Acquisition on Private Sector Banks In Global Economy
Dr. Nanaji Krishna Aher — 26

5. Dramatic Stress: The Spirit of Play
Sheema Farheen
Dr Farhat Durrani — 32

6. Recent Trend InBanking
Swapnil .Kalyan. Laghane, Dr Quazi Baseer Ahmed — 41

7. Corporate Governance in Maharashtra Companies
Dr. Rajesh Bhausaheb Lahane — 49

8. Effective Digital Marketing Strategies & Approaches
Dr Vikrant Uttamrao Panchal — 59

9. Global Competitiveness of Indian Industries Strategy and Innovation
Dr. Rajendra Ashokrao Udhan — 70

10. Indian logistics Trade in Dynamic World Scenario
Adnan Ali Zaidi, Dr Memon Ubed — 79

11. Contribution of Technology and Communication in The Development of Teaching
Dr. Dhanraj Dattatray Kadam — 95

12. लातूर जिल्ह्यातील मराठी महिन्यानुसार यात्रांचे वितरण : एक भौगोलिक अभ्यास
प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर — 101

13. हिंदी साहित्य में किसान विमर्श
14. डॉ. सुभाष इंगळे — 105

15. बदलते भारतीय परिदृश्य में- विषाणुनाशक यज्ञ संस्कृति की उपयुक्तता
प्रा. भारती एस. आर — 108

16. अध्यापन पध्दती व व्यावसायिक विकास घडवून आणणाऱ्या सुधारणा
डॉ. सतीश नारायण लोमटे — 115

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

112

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Oct. 2018 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

बदलते भारतीय परिदृश्य में- विषाणुनाशक यज्ञ संस्कृति की उपयुक्तता

प्रा. भारती एस. आर

एम. ए. नेट (संस्कृत), योग,आयुर्वेद एवं निसर्गोपचार विशेषज्ञ, जवाहर महाविदयालय अणदुर
ता. तुळजापूर जि. उस्मानाबाद

प्रस्तावना:-

पर्यावरण की यथा स्थिति प्राणीमात्र के लिये ही नहीं वरन् समस्त विश्व के अस्तित्व रक्षार्थ आवश्यक है। अपने स्वरूप में अवस्थित प्रकृति सबकी पोषिका - पालिका है इसीलिये इसको अदिति माता कहा गया है। भैतिक दृष्टि से प्राकृतिक तत्वों को देव कहते हैं जो प्रतिक्षण प्राणियों का हित सम्पादन करते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, ऋतु, औषधि - वनस्पतियों के अनुदान से हमारा जीवन चलता है। हम ऋणी हैं उन सब के जिनसे हमारा जीवन चलता हैं हम ऋणी हैं उन सबके जिनसे हम अनुप्राणित होते हैं। बुद्धिमानों का काम है कि वह भी जगत् का उपकार करे क्योंकि जो संसार का जितना हित करता है वह कुदरती व्यवस्था से उतना सुख और आनन्द प्राप्त करता है। पर्यावरण हमारा भगवान है क्योंकि भगवान शब्द का निर्माण प्रकृति के पांच महाभूतो के नाम पर है। जैसे भ=भूमि, ग-गगन, व वायु, अ=अग्नि, न-नीर । भगवान की भक्ति यही है कि हम पर्यावरण को बिगड़ने न दे अथवा प्रदूषण दूर करने के संपूर्ण प्रयासों का आश्रय ग्रहण करें। आज जब भस्मासुर की तरह प्रदूषण अपने जनक आदमी को ही भस्म करने तेजी से बढ़ रहा है तब विष्णुरूप यज्ञ ही (यज्ञो वै विष्णुः) उससे रक्षा कर सकता है। यज्ञों के द्वारा प्रकृति में भैषज्य (औषध) तत्वों को भरा जाता है, जिससे पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगंधिमय होता है। यज्ञों के अनुष्ठान से हमें पेड़ पौधे लगाने तथा पशुपालन की प्रेरणा मिलती है क्योंकि हम घी, सामग्री इन्ही से प्राप्त करते हैं

यज्ञों में अग्निहोत्र महत्वपूर्ण माना गया है। मुखं वा एतयज्ञानां यदग्निहोत्रम्। (शतपथ ब्रा. 14.3.20.02)

यह अग्निहोत्र यज्ञों का मुंह है। अग्निहोत्र में प्रतिदिन सायंकाल और प्रातःकाल हवनकुंड में अग्नि में गाय के घी तथा जडी बूटी औषधियों से अग्नि एवं सूर्य के लिए स्वाहाकारपूर्वक आहुतियां दी जाती है। ऐसा करने पर अश्वमेध का फल मिलता है । इसीलिये इसको जरामर्यसत्र कहा जाता है अर्थात् जो आजीवन किया जाय. जीवन में एक भी दिन जिसका त्याग न हो। इस छोटे से अग्निहोत्र को देवयज्ञ भी कहते हैं। देवताओं की अनुकूलता के लिये किया जाने वाला हवन. दैनिक अनुष्ठान के पांच कर्त्तव्य कर्मो मे एक आवश्यक वैयक्तिक धर्म है। प्राचीन महर्षियों ने अग्निहोत्र (हवन) की एक अत्यंत छोटी विधि प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को हर रोज करने के लिये दी है, जिसको समपन्न करने में 10-15 मिनट का भी समय नहीं लगता। मुख्य रूप से 16 आहुतियां छोटे-छोटे मंत्रों से दी जाती है। यज्ञ में मंत्रों के उच्चारण के साथ क्रिया की जाती है। क्रिया करना ही कर्मकाण्ड का अंग है। बिना मंत्रोच्चारण किये पदार्थों को अग्नि में जला देने से वह यज्ञ के स्वरूप को प्राप्त नहीं करता है और न वह उस महान् लाभ को भी उत्पन्न करने में उतना समर्थ हो सकता है। इसीलिये विधिवत् अग्निहोत्र करने से ही यथोचित लाभ होता है।

हवन से रोग निवारण
ऋषियों के वो जमाने इकबार फिर से आ जा
पावों पहूँ मैं तेरे अपनी झलक दिखा जा ।।
हर घर में यज्ञ होवे सुख शान्ति देने वाला ।।
पर्यावरण का पोषक सुस्वास्थ्य देने वाला ।।

अग्निहोत्र वेदों का प्राण है ! वेद केवल भारत के ही नहीं अपितु विश्व के सर्व प्रथम ग्रन्थ हैं. इस सत्य को पाश्चात्य विदवानों ने भी स्वीकार किया है:

Rigved is the oldest book in the world Library

उद्देश:-

आजकल स्वाइन फ्लू डेंगू, चिकनगुनिया जैसी विविध व्याधियों से मानव त्रस्त है ! इनसे मुक्ति पाने हेतु अग्निहोत्र द्वारा उपर्यो को विशद करना है।

विषय विवेचन:-

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) Oct. 2018	Peer Reviewed SJIF Impact factor	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने इस प्रकार की व्याधियों के निवारणार्थ अग्निहोत्र को सर्वोत्तम उपाय बतलाते हुए कहा है:

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' (शतपथ ब्राह्मण) अग्निहोत्र सर्वश्रेष्ठकर्म है !

अग्निहोत्र के लिऐ औषधीय गुण युक्त विशिष्ठ वृक्षोंकी सूखी लड़कियों का चयन किया जाता है. जैसे:- चन्दन, वट वृक्ष आम, गुलर, पीपल तथा अन्य क्षीरी वृक्षकी समिधा कहा जाता है ! विविध वनस्पतियों जड़ी बूटियों के सूखे, पुष्पों फलो, पतों, को सामग्री के रूप में प्रयुक्त किया जाता है. जैसे- पलाश पुष्प, बिल्वपत्र बिल्व फल, धन्वन्तरि, गेंदापुष्प, तुलसी, माका, गिलोय, अश्वगंधा, गुलाबपुष्प, मालती पुष्प पत्र, सूखे मेवे आदि. उसी के साथ शुध्द गोघृत भी डाला जाता है !

राष्ट्रीय वानस्पत्यनुसन्धान संस्था – (NBRI) के वैज्ञानिकों ने यज्ञ हवन – अग्निहोत्र इस विषय में अनुसन्धान करके यह निष्कर्ष निकाला है In the bid to study the actual impact of havans an indoor study was carried out the NBRI team including prof Nautugal, mr- Puneet Singh chauhan a fellow of Asian agri – history Foundation Yashwant Laxman Nene Their opinion is as follows:

"After the experiment, it was observed that though there was no reduction in the number of bacteria by burning of wood alone, smoke emanating from herbs led to over 94 percent reduction in aerial bacteria" Absence of pathogenic bacteria in the open room even after the 30 days was indication of the bacterial potential of the medicinal smoke treatment."

अग्निहोत्र से हम प्रदूषणमें भी अपनी रक्षा कर सकते हैं उसका एक उदाहरण-३ डिसेंबर १९८४ में भोपाल में 'युनियन कार्बाइड' कारखाने से मेथिल आयसोसायनेट-यह विषाक्त वायु सर्वत्र फैल गया। उस दुर्घटनामें हजारों लोग मृत्युके मुख में चले गये, अनेक विकलांग हो गये 'इन्डियन कौन्सिल ऑफ मेडिकल रिसर्च' नामक संस्था ने जब उस पर अनुसन्धान किया तब पता चला कि उस वायु से फेफड़े, मेंदू, स्नायु, त्वचा आदि पर दुष्प्रभाव पड़ा है। उसी समय दैनिक अग्निहोत्र करने वाले सुन्दरलाल कुशवाह एवं एम.एल.राठौड़ ये दो परिवार घर के दरवाजे और खिड़कियों बंद करके अग्निहोत्र करने लगे उस अग्निहोत्र के कारण ही उनके परिवार के किसी भी सदस्य को हानि नही हुई उनको जीवन दान मिला। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने भी श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है: यज्ञात् भवति पर्जन्यः पर्जन्यादन्न सम्भव। अन्नाद् भवन्ति भूतानि तस्मात् यज्ञकर्म समुद्भव ।। (भगवत गीता) 'धूमज्योति सलिल मरुतां सन्निपातः मेघ'' (कविकुलगुरु कालिदास रचित मेघदूतम्) अग्निहोत्र के धूम से मेघ बनते है, उनसे मधुर जल की वृष्टि होती है, वृष्टि से फसल अची निकलती है और उस अनाज के आधार पर ही हम जीते हैं। इसलिए अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए अग्निहोत्र से वृक्ष- वल्ली, औषधी, वनस्पति, परिपुष्ट होती है। ऐसे प्राणरक्षक पर्यावरण पोषक वृक्षों को ऋषियों ने मन्त्रो के माध्यम से नमन किया है:

ओं नमो वृक्षेभ्योयथेयं पृथिवी देवभूतान् गर्भे दधास्ति वै। तथेमं वृक्षक दध्यात्वां (ऋग्वेद).
क्षितिजा भवन्तु शं नो ।।

We pray to all the Trees. All the living beings are a produced from the Earth. Trees are also a part of living being
O God please protect all the trees, let all the trees be beneficial to us.

अग्निहोत्र का आध्यात्मिक पक्ष

The main purpose of havan is for the purification of our surroundings. It is person's duty to thank nature for balancing our surroundings and making them fit human existence.

Meditation and prayers are port at havan or good karma. Respect and humbleness is also considered part of good karma, which purifies your heart. Concentration of the mind gives power for self-realization.

अग्निहोत्र का प्रमुख प्रयोजन है पर्यावरण को शुध्द करना और मानव जीवन के अस्तित्व को बनाये रखना इसके लिए प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना और धन्यवाद देना हमारा कर्तव्य है। अग्निहोत्र एक पवित्र कर्म है। प्रार्थना ध्यान, श्रेष्ठ कर्म ये सभी यज्ञ के ही अंग है । यह अत्यन्त दुःखकी बात है कि जिस अग्निहोत्र का उदय भारत देश हुआ वे भारतीय कहलाने वाले ही उस परमपावन कर्म को ढोग, पाखण्ड, अंधश्रद्धा, कर्मकाण्ड कह कर कलंकित कर रहे हैं अग्निहोत्र एक शास्त्रशुध्द पर्यावरणपोषक पवित्र कर्म है इस सत्य को कोई भी असत्य सिध्द नहीं कर सकता। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् (यजुर्वेद) महाराष्ट्र के वसंत परांजपे नामक व्यक्ति ने अग्निहोत्र करके कृषि का उत्पादन चौगुना किया है। यह प्रयोग उन्होंने अमरीका में वॉशिंग्टन से लगभग ४० कि.मी. अन्तर पर किया है जहाँ उन्होंने अग्निहोत्रहॉऊस की स्थापना की है।

वह कौन है जगत में जो सुख नहीं चाहता?
वह कौन है धरा पर जो शान्ति नहीं चाहता?
वह कौन है संसार में जो आरोग्य नहीं चाहता?

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) Oct. 2018	Peer Reviewed SJIF Impact factor	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

वह कौन है विश्व में जो आनन्द नहीं चाहता?

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।। यह प्रार्थना सभी करते हैं उसे सार्थक बनाने हेतु आज नही तो कल अग्निहोत्र अवश्य करना होगा।

सुख. शान्ति और आनन्द का आधार है समन्वय। समन्वय के सिद्धांत पर ही आयुर्वेद आधारित है। सामंजस्य प्रकृति का अटल नियम है। आकाश. पृथ्वी तथा शरीर-इन तीनों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। जब तक इन तीनो में एक जैसी स्थिति न हो तब तक मनुष्य सुखी नहीं रह सकता। शरीर को ठीक रखने के लिए धरती का ठीक होना आवश्यक है एवं भूमि को सही रखने के लिए आकाश का सुधार जरूरी है। पृथ्वी और मनुष्य देह स्थूल हैं, पर आकाश सूक्ष्म है दिव्य शक्तियां, जिन्हें देवता कहते हैं वे भी सूक्ष्म हैं। स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म तत्व अधिक शक्तिशाली तथा प्रभावी होता है जिस तरह परमाणु अणु से सूक्ष्म है अतः अणु से शक्तिवान होते हैं उसी तरह सूक्ष्म महान् शक्ति है जिससे आकाशीय एवं पार्थिव संसार सुधरते हैं। यज्ञ सूक्ष्मीकरण के सिद्धान्त पर आधारित अद्भुत प्रयोग है। सूक्ष्मीकरण से शक्ति का विकास होता है। यज्ञ स्थूल वस्तुओं को सूक्ष्म बना देता है। आकाश. धरा. और शरीर में समन्वय स्थापित करने का वैज्ञानिक साधन है यज्ञ। अशुद्ध वायु को शुद्ध बनाने. रोगों के विषों को नष्ट करने तथा शुद्ध वायु को और अधिक पुष्ट-उपयोगी-हल्की तथा सगुण बनाने के लिये अग्नि में विशेष औषधियां डालकर वायु में फैलाया जाना अग्नि (होम) चिकित्सा है, जिसका विधान अथर्ववेद मे

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कम्....॥ अथर्ववेद 3/11/1

यहां कुशल चिकित्सक की घोषणा है कि हे रोगी ! तुम्हें सुखपूर्वक जीने के लिये होम द्वारा रोग बन्धनों से मुक्त करता हूँ।

हवन में अग्नि तो काम करती ही है साथ में विद्युत-शक्ति अन्तरिक्ष में उत्तमता के साथ समाविष्ट हो जाती है. जो रोग दूर करने में साधन बनती है। होम से वायु शुद्ध होकर रोगी को लाभ पहुंचाती है। इसी प्रकार यज्ञ से सूर्य-किरणों में भी रोग निवारक गुण आ जाता है। यज्ञ के द्वारा औषधियों का प्रभाव सीधा फेफड़ों में होकर रक्त में चला जाता है और हृदय में भी पहुंचकर उसे बल देता है। यज्ञ प्रक्रिया में प्रायः पदार्थ की कारणशक्ति को उभारा जाता है।

यज्ञ का प्रमुख तत्व है मंत्र। वैदिक ऋषियों ने हवन की सफलता अथवा पूर्ण प्रभाव के लिये मंत्र को भी उसका अंग स्वीकार किया है। विज्ञान में ताप. ध्वनि और प्रकाश को शक्ति की मूलभूत ईकाई माना गया है। मंत्र को व्यापक बनाने के लिये उसके साथ ताप एवं प्रकाश को यज्ञ के रूप में जोड़ना पड़ता है तभी वह अधिक शक्तिशाली तथा विश्वव्यापी बनता है। मंत्र शक्ति से जो ध्वनि तरंगें उत्पन्न होती हैं वे तीव्र गति से ऊपर उठती हैं। ईथर तत्व के माध्यम स अपने देवता सविता तक पहुँचती हैं। जब यह ध्वनि सूर्य के अन्तराल से टकराकर वापस आती है तो अपने साथ सूर्य की शक्तियों को आत्मसात किये रहती है जो याजक के शरीर मे उतरती चली जाती है। यज्ञ में जय संकल्प शक्ति और तदनुकूल वेद मंत्रों की पुनः-पुनः आवृति से मंत्र का प्रभाव सतेज होता जाता है. छन्दात्मक मण्डल की पुष्टि होने लगती है। वेदमंत्रों में उदात्त विचार पाये जाते है। यज्ञशाला के वातावरण में रोग निरोधक तत्व प्रचूर मात्रा में रहते हैं. जो उधर बैठते हैं उनके रोमछिद्रों में होकर वह ऊर्जा भीतर प्रवेश करती है और जहाँ भी विजातीय. अनुपयुक्त है उसे निरस्त करती है। यज्ञोपैथी अर्थात् यज्ञ चिकित्सा महत्वपूर्ण उपचार पद्धति है. जिससे शारीरिक ही नहीं मानसिक रोगों को भी जड़ से काटा जा सकता है। व्याधियाँ केवल शारीरिक रोग के रूप में ही नहीं आतीं वरन् वे आध्यात्मिक - आधिभौतिक - आधिदैविक कारण एवं स्वरूप वाली होती हैं , प्रारब्धजन्य या दुष्कृतों के फलस्वरूप न केवल रोग अपितु अन्य प्रकार के संकट भी उत्पन्न होते हैं. उनके निराकरण में यज्ञोपैथी जितनी फलप्रद सिद्ध होती है उतनी और कोई पैथी नहीं। यज्ञ से पर्यावरण की पुष्टि. विश्वव्यापी प्रदूषण की निवृत्ति तथा प्राणीमात्र की दैहिक-दैविक-भौतिक चिकित्सा की जा सकती है। रोग निवारक हवन के लिये तांबे या मिट्टी के पिरामिड आकार के कुण्ड में दूधवाले वृक्ष की समिधाओं (पीपल. बड़. आम. गूलर. पलाश. बेल. शमी. में से किसी एक दो की सूखी लकड़ियों अथवा गायगोबर के कन्डे में कपूर से अग्नि जलाकर गोघृत एवं सुगन्धित व रोगनाशक जड़ी बूटियों की हवन सामग्री की आहुतियां सूर्योदय या सूर्यास्त के समय रोगनिवारक मंत्रों से दी जाती है। आगे के विविध रोगों से सम्बन्धित मंत्रों तथा औषधियों की सूची कर्मकाण्डीय प्रक्रिया सहित दी जा रही है:-

1. ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 163 के छः मंत्रों. अथर्ववेद काण्ड 2 सूक्त 33 के तीसरे से सातवें मंत्रों (प्रथम और द्वितीय मंत्र ऋग्वेद 10/163 में ज्यों की त्यों है. शेष मंत्रों में शब्दों में भिन्नता है) तथा अथर्ववेद काण्ड 9 सूक्त 8 के 22 मंत्रों में समस्त शरीर के सभी अंग-प्रत्यंगों से रोगों के निवारण की कामना की गई है। सर्व रोगनिवारक कुल 33 मंत्र हैं।
2. ऋग्वेद के इन मंत्रों के मंत्रद्रष्टा ऋषि "विवृहा काश्यप. देवता-यक्ष्मघ्नम् (रोग नाश) छन्द-अनुष्टुप तथा स्वर गान्धार हैं।
3. अथर्ववेद के इन मंत्रों के ऋषि भृगु-अंगिरा. देवता - आत्मा एवं वैद्य हैं

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) Oct. 2018	Peer Reviewed SJIF Impact factor	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

4. इन मंत्रों में चिकित्सा के संकल्प, उपदेश, आश्वासन, आदेश आदि का वर्णन है, किसी औषधि का उल्लेख नहीं है. केवल अथर्ववेदीय अंतिम मंत्र में उदय होते हुए सूर्य की किरणों से रोग निवारण होने का उल्लेख है।
"सर्वशरीर रोगनाशोपदेशः" अर्थात्
5. अथर्ववेद के भाष्यकार पं क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने सूक्त के प्रारंभ में शीर्षक लिखा है :- समस्त शरीर के रोगों के नाश का उपदेश।
6. ऋग्वेदीय छः मन्त्रों तथा अथर्ववेदीय तीसरे से सातवें मंत्रों अर्थात् 11 मंत्रों के अंतिम चरण में है विवृहामि ते = तेरे रोग को दूर करता हूँ।
7. अथर्ववेद 9/8 के प्रारंभिक पांच मन्त्रों में दूसरी पंक्ति है :-

(क) "सर्व शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे" एवं मन्त्र 6 से 9 में बहिर्निर्मन्त्रयामहे अर्थात् तेरे समस्त शरीर के रोग को बाहर निकालते है, फटकारते हैं

(ख) मंत्र संख्या 10,11,12,19,20 में दूसरीपंक्ति है :
"**यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् अर्थात समस्त रोगों के जहर को तुझसे निकालता हूं, अलग करता हूं**

(ग) मन्त्र संख्या 13 से 18 की दूसरीपंक्ति है:
"अहिसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्"
अर्थात् वे महापीड़ायें कष्ट न देती हुई, रोगों को न बढ़ाती हुई छिद्र से बाहर निकल जावें।

8. इन मंत्रों की शेष पंक्तियों में शरीर के अंगों तथा रोगों के नाम उल्लिखित हैं।

ऋग्वेदीय मंत्र [10/163)

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते॥1॥

हे रोगी! मैं वैद्य तेरी आँखों, नासिका,कानों और ठोड़ी से रोग दूर करता हूँ, जो शीर्षस्थ रोग हैं उसे भी मस्तिष्क और तेरी जिह्वा से दूर करता हूँ।।।।

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्य: कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।
यक्ष्मं दोषण्यमंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते॥2॥

हे रोगिन् ! तेरी गर्दन की नाड़ियों, ऊर्ध्व धमनियों हड्डियों और संधि (जोड़) से रोग को दूर करता हूँ तथा हाँथों में स्थित यक्ष्म को कन्धों से और बाहुओं से दूर करता हूं॥२॥

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोहृदयादधि।
अक्ष्मं मतस्नाभ्यां यवनः प्लाशिभ्यो वि वहामि ते॥3॥

हे रोगी! तेरी आंतों, गुदाओं, स्थूल आंत, हृदय, दोनों गुर्दों, यकृत और तिल्ली आदि यन्त्रों से यक्ष्म रोग को दूर करता हूँ॥3॥

ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भया पाणिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।
यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदानंससो वि वृहामि ते॥4॥

हे रोगिन। तेरी जंघाओं, विशेष अस्थि वाले पैरों, एड़ियों पंजो, नितम्बभागों, कटिभागस्थ, उपस्थ प्रदेश से रोग को दूर करता ॥४॥

मेहनादनंकरणाल्लोमभयस्ते नखेभयः।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते।।5।।

मूत्र लाने वाले मूत्रेन्द्रिय, लोमों, नखों और समस्त शरीर से इस यक्ष्म रोग को दूर करता हूँ ॥5॥

अङ्गद गाल्लोम्नोलोम्नो जातं पर्वणिपर्वणि।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते।6॥

हे रोगिन्! अंग-अंग से, लोम-लोम से और पोर-पोर में उत्पन्न उस यक्ष्मा को समस्त शरीर से दूर करता हूँ।।6।।

अथर्ववेद {2/33/3से7]

हृदयात् ते परि क्लोम्नो हलीक्षणात् पार्श्वाभ्याम्।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीहो यकनस्ते वि वृहामसि॥3॥

तेरे हृदय से, क्लोम (फेफड़ो) से, तथा श्वास की नाली से, पसलियों से, गुर्दे से, तिल्ली से, यकृत (जिगर) से, तेरे रोग को दूर करता हूँ।।3।।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) Oct. 2018 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरूदरादधि
यक्ष कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते।4॥

तेरी आंतों से, गुदा की नाड़ियों से, कोलन (भीतरी मल स्थान) से, उदर में से, तेरी दोनो कोखों से, कोख की थैली से, और नाभि से रोग को उखाड़े देता हूँ ।।4।।

उरूभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पाणिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।
यक्ष्मं भसद्यं श्रोणि भ्यां भासदं भंससो वहामि ते ॥5॥

तेरी दोनो जंघाओं से, दोनो घुटनों से, दोनो एड़ियों से, दोनों पैरों के पंजों से, तेरे दोनों कूल्हों व नितम्बों से और गुह्य स्थान से कमर और गुप्त स्थानों में हुए रोग को दूरकरता हूँ ।।5।।

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते ।।6।।

तेरी हड्डियों से, मज्जा धातु (अस्थि के भीतर के रस) से, पठान और नाड़ियों से और तेरे दोनों हाथों से, अंगुलियों से और नखों से रोग को मै जड़ से दूरकरता हूँ ।।6।।

अङ्गे अंङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि।
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्च विवृहामसि।।7।।

जो रोग तेरे अंग-अंग में, रोम-रोम में, गांठ-गांठ में है। हम तेरे त्वचा के और सब अवयवों में व्यापक रोग को ज्ञान दृष्टि वाले विद्वान के विविध उद्योग से जड़ से उखाड़ते हैं 7।

अथर्ववेद (9/8)

शीर्षक्तिं शीर्षामयं कर्णशूलं विलोहितम् ।
सर्व शीर्षण्यं ते रोग बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।1।।

मस्तकशूल, कर्णशूल और विलोहित (पाण्डुरोग) - इन सभी रोगों को हम आपसे दूरकरते हैं।।1।।

कर्णाभ्यां ते कंकूषेभ्यः कर्णशूलं विसल्पकम् ।
सर्व शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।2।।

आपके कानों और कानों के भीतरी भाग से कर्णशूल और विसल्पक (विशेष कष्ट देने वाले) रोग को हम दूरकरते हैं तथा सभी शीर्ष रोगों को हमआपसे दूरकरते हैं ।।2।।

यस्य हेतोः प्रच्यवते यक्ष्मः कर्णत आसीतः ।
सर्व शीर्षण्यंते रोग बहिर्निर्मन्त्रयामहे॥3॥

जिसके कारण यक्ष्मा रोग कान और मुख से बहता है, उन (सभी शीर्ष रोगों को हम आपसे बाहर करते हैं।

यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पूरूषम् ॥
सर्व शीर्षण्यं ते रोग बहिर्निर्मन्त्रयामहे।।4।।

जो रोग मनुष्य को बहरा और अन्धा कर देते हैं, उन शीर्ष रोगों को हम आपसे दूरहटाते हैं।।4।।

अंङ्गभेदमङ्गज्वरं विश्वाङ्गयं विसल्पकम् ।
सर्व शीर्षण्यं ते रोग बहिर्निर्मन्त्रयामहे।।5।।

अंग भंजक, अंग ज्वर, अंग पीड़क, विश्वाङ्गय रोग तथा सभी शीर्ष रोगों को हम आपसे दूरकरते हैं। 15 ।।

यस्य भीमः प्रतीकाश उद्वेपयति पौरुषम् ।
तक्मानं विश्वशारद बहिर्निर्मन्त्रयामहे॥6॥

जिसका भयंकर उद्वेग (प्रतीकाश) मनुष्य को कम्पायमान कर देता है उस शरत्कालीन ज्वर को हम आपसे बाहर करते हैं।।6।।

य ऊरू अनुसर्पत्यथो एति गवीनिके।
यक्ष्मं ते अन्तरङ्गेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे।।7॥

जो रोग जंघाओं की ओर बढ़ता है और गवीनिका नाड़ियों में पहुंच जाता है उस यक्ष्मा रोग को आपके भीतरी अंगों से हम बाहर निकालते हैं। 17।।

यदि कामादपकामादहृदयाज्यायते परि।
यक्ष्मोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे॥8॥

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

118

Issue XI , Vol. III (Indexed) Oct. 2018 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

जो इच्छाकृत कार्यों अथवा बिना कामना से हृदय के समीप उत्पन्न होता है उसं कफ को हृदय और अन्य अंगों से हम बाहर निकालते हैं। 8 ।।

हरिमाणं ते अंगेभ्योऽप्वामन्तरोदरात्।
यक्ष्मोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे॥9॥

हम आपके अंगों से हरिमा (रक्तहीनता) रोग को. पेट के भीतर से जलोदर रोग को और शरीर के भीतर से यक्ष्मारोग को धारण करने वाली स्थिति को बाहर करते हैं। ।9।।

आसो बलासो भवतु मूत्र अवत्वामयत्।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निर्वोचमहं त्वत्॥१०॥

आमदोष मूत्र में बाहर आए।
मन्त्र सामर्थ्य द्वारा हम बाहर निकालते कफ शरीर सभी यक्ष्मा रोगों के विष को है।।10।

बर्हिर्बिलं निर्द्रवतु काहाबाहं तवोदरात्।
यक्ष्माणां सर्वेषां विष निरवोचमहं त्वत ॥ 11।

काहाबाह अर्थात फड़फड़ाने वाले रोग आपके पेट से द्रवीभूत होकर बाहर जाएं, सभी यक्ष्मा रोग के विष-विकारों को हम मन्त्र सामर्थ्य से. आपके शरीर से बाहर निकालते हैं।1 1।।

उदरात् ते क्लोनो नाभ्या हृदयादि।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत 12।।

हम आपके पेट. "क्लोम" (फेफड़ों). नाभि और हृदय से सभी रोगों के विषरूप विकारों को शरीर से बाहर निकालते हैं।1121।

याः सीमानं विरूजन्ति मूर्धानं प्रत्यर्पणः।
अहिसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ॥ 13॥

जो सीमा भाग को पीड़ित करते हैं और सिर तक बढ़ते जाते हैं वे रोग दूर होकर रोगी के लिए कष्टकारक न होते हुए शरीर के रंध्रों से द्रवरूप होकर बाहर निकलें ।।। 3 ।। {मं. क्र. 14 से 18 तक अमर्यादित रूप से बढ़ी हुई हड्डियों के पीड़ादायक हिस्सों को द्रवीभूत करके बाहर निकालने का उल्लेख है। यह विधा बहुत उपयोगी हो सकती है. किन्तु वर्तमान समय मे यह शोध का विषय है।

या हृदयमुपर्षन्त्यनुतन्वन्ति कीकसाः।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ॥ 14॥।

हृदय और हँसुली (गीस्थि) की 'कीकस' नामक हड्डियाँ हृदय जो क्षेत्र मे फैलती हैं. वे सभी वेदनाएं दोषरहित और कष्टरहित (हिंसारहित)
होती हुई शारीरिक रन्धों से दवरूप होकर बाहर निकलें ।।14।।

याः पाश्वे उपर्पन्त्यनुनिक्षन्ति पृष्टीः।
अहिसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ॥ 15।

जो अस्थियां पार्श्व (पसलियों) में पाई जाती हैं और पीट भाग तक फैलती हैं, वे रोग रहित हों और मारक न बनती हुई शारीरिक छिद्रों (रन्धों) से द्रवीभूत होकर बाहर निकले ।।15।।

यास्तिरश्चीरुपर्षन्त्यर्पणीर्वक्षणासुते।
अहिसन्तीरनामया निवन्तु बहिर्बिलम्।। 1611

जो अस्थियाँ तिरछी जाती हुई आपकी पसलियों में प्रवेश करती हैं, वे भी रोहित और अमारक होकर द्रवीभूत होकर बाहर निकल जाएँ।।16।।

या गुदा अनुसर्पन्त्यान्त्राणि मोहयन्ति च।
अहिसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्।। 17।।

गुदा भाग तक फैली हुई जो अस्थियाँ आंतों को अवरुद्ध करती हैं. वे भी बिना कष्ट दिए रोग विहीन होकर शारीरिक छिद्रों से बाहर निकल जाएँ।।17।।

या मज्ज्ञो निर्धयन्ति परुंषि विरूजन्ति च।
अहिसन्तीरनामया निवन्तु बहिर्बिलम् ॥ 18॥

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

Issue XI , Vol. III (Indexed) | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Oct. 2018 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

वे अस्थियाँ जो मज्जा भाग को रक्तहीन करती हैं और जोड़ों मे वेदना पैदा करती हैं. वे बिना कष्ट दिए रोग रहित होकर शारीरिक रन्ध्रों से बाहर निकलें।।18।।

ये अङ्गानि मदयन्ति यक्ष्मासो रोपणास्तव । यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्। 19।।

यक्ष्मा रोग को दूर करने वाली और अंगों पर मांस की वृद्धि रने वाली जो औषधियां आपके अंगों को आनन्दित करती है. उनसे सभी यक्ष्मा रोग के विष-विकारों को हम आपसे दूर करते हैं।।।।

विसल्पस्य विद्रधस्य वातीकारस्य वालजेः।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ।।2011

विसल्प (पीड़ा). विद्रधि (सूजन). वात कार (वात रोग) और अलजि इन सभी रोगो के विष को हम आपके शरीर से. मन्त्र प्रयोग से दूर हटाते हैं।।20।।

पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणि भ्यां परि भासा।
अनूकाढर्षणीरुष्णिहाभ्य: शीर्णो रोगमनीनशम् ।2111

आपके पैरो, घुटनों. कूल्हों, कटि (गुप्त भाग) रीढ़, गर्दन की नाडियों और सिर से फैलने वाली आपकी पीड़ाओं को हमारे द्वारा विनष्ट कर दिया गया है। 121 ।।

सं ते शीर्ण: कपालानि हृदयस्य च यो विदु:।.
उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्णो रोगमनीनशोंगभेदमशीशमः।।22॥

आपके सिर पर उदय होते सूर्य देव ने अपनी किरणों से रोग को विनष्ट किया है और चन्द्रदेवआपके कपाल भाग तथा हृदय के अंग भेद को शान्त कर देते हैं।।22।।

सामारोपः-

सर्व रोगनाशक हवन सामग्री

1. अड़सा. वासा, वृष, अरुसा,. कफनिसारक, रक्तपित्तनाशक बसौटा, Adhatoda क्षयनाशक
2. आंवला. आमलकी, धात्रीफल. आयुवर्ध्दक, नेत्र विकारनाशक
3. आम के पत्ते. आम्रपर्ण. रक्तविकार तथा प्रमेहनाशक Mango Leeves खांसी एवं ज्वरनाशक
4. उड़द. माष, रथजिता बलधारक बवासीर नाशक
5. इलायची. दिव्यगंधा,कांता, वृहदेला. दुर्गंधनाशक मूत्ररोगनाशक
6. काजू. काजूत, बादामे फिरंगी. वातनाशक, पौष्टिक, वाजीकारक
7. खोपरा. नारियल, coconut. शीतल पौष्टिक रक्तविकार नाशक
8. चावल. तंडुल, rice. पेचिनाशक बुद्धिवर्धक
9. जामुन. जम्बू, काला जाम. गुठली, मधुमेहनाशक
10. जायफल. जातीफल Nutmeg. कृमिनाशक वातनाशक.
11.

संदर्भग्रंथ सूचिः-

1.ऋग्वेद
2.यजुर्वेद
3.अथर्ववेद
4.यज्ञोपैथी -डॉ. कमल नारायण
5.अग्निहोत्र एक अवलोकन - डॉ.धर्मेन्द्र कुमार जी
6. सत्यार्थ प्रकाश - महर्षि दयानंद सरस्वती
7. अग्निहोत्र का स्वा येतवानुभव - डॉ. सुरेखा राजेंद्र भारती

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad